Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नैतिक मूल्य और मानव जीवन

डॉ. सीमाबाला अवास्या*

* सहायक प्राध्यापक (हिंदी) शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – ***जो भरा नहीं है भाव से, बहती जिसमें रसधार नहीं।***
वो हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश प्यार नहीं।।

एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र में रहने वाले लोगों के माध्यम से ही संभव है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा और प्रेम, आपसी सद्भाव, अनुशासन और स्थापित नियमों के अनुसार अपना आचरण रखना अच्छे और सच्चे मानव की पहचान है। आचरण वह नैतिक मूल्य है, जो व्यक्ति स्वयं के लिए करता है। अर्थात् स्वयं का स्वभाव, स्वयं की आदत, स्वयं की प्रकृति और जब व्यक्ति दूसरों के लिए कुछ कार्य करता है तो वह उसका व्यवहार कहलाता है। अर्थात् दूसरों के साथ किया गया आचरण व्यवहार कहलाता है।

शिक्षा ज्ञान रूपी आलोक और आध्यात्मिक शक्ति का एक स्रोत है, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास यात्रा के लिए हमारी अंतर्निहित प्रकृति में आवश्यक परिवर्तन लाता है। इसके लिए समाज में शिक्षा का स्तर, उसकी गुणवत्ता और व्यवस्था का उत्तम होना अपरिहार्य है। अच्छी शिक्षा वह होगी जो हमारे भूतकाल से उत्तम बातों को ग्रहण कर सके । वर्तमान का श्रेष्ठ उपयोग कर सके, साथ ही भविष्य की दिशा भी निर्धारित कर सके। जब भी मूल्यों की बात होती है, कई शब्द अलग-अलग संदर्भ में उपयोग में लाते हैं – जैसे जीवन मूल्य और मानवीय मूल्य। संभवत: इन सभी शब्दों के अर्थ और अभिप्राय एक ही हैं । मूल्य को किसी भी नाम से क्यों न पुकारा जाए, वे उन गुणों की ओर इंगित करते हैं, जिन्हें व्यक्ति महत्वपूर्ण और उपयोगी मानता है तथा जिन मूल्यों के पालन करने से व्यक्ति अपने लिए सामाजिक मान्यता प्राप्त करता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन में मूल्य ही सत्य होते हैं। जीवन की शुद्ध क्रियाएं धर्म कहलाती है, धर्म में शांति, प्रेम और अहिंसा समाहित रहते हैं। ये पांच तत्व सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा मानव मूल्य माने जाते हैं।

हम बात करते हैं सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र की, जिन्होंने अपने सत्यनिष्ठा के लिए, धर्म परायणता के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दिया, यहां तक की न्याय के लिए उन्होंने अपनी पत्नी से भी कफन मांगा । यह उनके उच्च आदर्शों का परिचय है। यही बात हम रामायण में भी देखते हैं, जब चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के पुत्र राम जो शिक्षा के लिए गुरुकुल जाते हैं तो उनके द्वारा भी मां से भिक्षा मांगना यह सिखाता है कि एक राजा के बेटे होते हुए भी समाज में विनम्रता का भाव होना चाहिये । हम बात करते हैं भगवान कृष्ण की, उन्होंने भी आश्रम में रहकर सत्य और नैतिकता की बातें सीखी। इस प्रकार हम सकते हैं कि वह सर्वेश्वर जिसके आगे सारी दुनिया झूकती है, वह भी शिक्षा दीक्षा के लिए स्वयं को समर्पित कर रहा है। इस प्रकार कह सकते हैं कि नैतिकता विनम्रता का एक आवश्यक गुण है, जो चाहे राजा हो या रंग सभी में होना आवश्यक है।

इस प्रकार प्राचीन काल से ही चाहे जैन धर्म हो, बौद्ध धर्म हो, वैदिक धर्म हो, सनातन धर्म हो यह हमारे प्राचीनतम सनातन धर्म है। यह हमारी सभ्यता संस्कृति है। यहां हमें नैतिक मूल्य सिखाए जाते हैं। मूल्य हमारी आस्थाओं और सामाजिक मर्यादाओं पर आधारित आचरण के सिद्धांत हैं। जब हम अपने आचरण और व्यवहार को समाज के नीतिगत दायरे में लाते हैं तो हमारा मूल्य नैतिक मूल्य बन जाते हैं। भगवतगीता जिसे हम मानवीय संबंधों, दृष्टिकोण, दर्शन, ज्ञान और उपदेश का सर्वोत्कृष्ट और सर्वकालिक ग्रंथ मानते हैं, उसमें 26 मानवीय मूल्यों की विवेचना की गई है। इन गुणों में निर्भीकता, पवित्रता, स्वयं पर नियंत्रण, त्याग, शास्त्रों का अध्ययन, स्पष्टवादिता, सत्यनिष्ठा, क्रोध का अभाव, शांतिप्रियता, छल, कपटरहित व्यवहार, सभी के प्रति क्षमा का भाव, विनम्रता, ऊर्जावान, क्षमाशीलता, दृढ़ता, शुद्धता, चुनौतियों का सामना करने की शक्ति, उत्तम व्यक्ति के प्रमुख गुण माने जाते हैं।

परिवार व्यक्ति के जीवन का प्रथम पड़ाव है। परिवार के जीवन मूल्यों को बच्चा आत्मसात करता है। अपनी शैशवावस्था में बच्चा अपने पारिवारिक वातावरण से अपनी प्रारंभिक अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है। परिवार द्वारा दिए गए संस्कार पूरी जिंदगी हमारे साथ रहते हैं और परिवार के संस्कारों की छाप हमारे व्यक्तित्व में स्पष्ट दिखाई देती है। कहा गया है कि परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला है और बच्चे की मां ही उसकी प्रथम गुरु होती है। प्रारंभ में मूल्यों की पहचान परिवार और माता-पिता के माध्यम से ही बच्चे तक पहुंचते है। परिवारों से ही समाज बनता है। अत: समाज के निर्माण में परिवार की भूमिका सर्वोपरि है। यदि परिवार अपने सदस्यों के व्यवहार और आचरण की जिम्मेदारी ले और इस राष्ट्रीय दायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाए तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा, जो स्वस्थ राष्ट्र की आधारशिला होगी।

परिवार के बाद मनुष्य के समाजीकरण की दूसरी कड़ी के रूप में शिक्षा जगत विशेष महत्व रखता है। विशेष रूप से बच्चों के मन में शिक्षकों का प्रभाव गहरा और लगभग स्थाई रहता है। एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थी के लिए एक अनुकरणीय आदर्श व्यक्ति रहता है। शिक्षक की कही हुई हर बात विद्यार्थी के लिए ग्राह्य और अंतिम होती है। कहा जाता है कि एक अच्छा शिक्षक हमारा जीवन बना देता है और एक खराब सहपाठी जीवन की दिशा ही बदल देता है।

शिक्षा विद्यार्थियों को अच्छा इंसान बनने, शाश्वत मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने और भविष्य में जीवन संघर्ष में शुचिता पूर्ण उपयोग करते हुए सफल होने का मार्ग प्रशस्त करती है साथ ही उसमें जिज्ञासा एवं प्रश्नानुकूलता का अंकुरण करती है। सही गलत का विवेक पैदा करती है। सच्चे ज्ञान अर्जुन का यही सफल मंत्र होता है। महात्मा गांधी के अनुसार 'जो शिक्षा आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करें, वही शाश्वत शिक्षा है।' आज शिक्षित युवाओं में कुंठा, हताशा, दिशा भ्रम दिखाई देता है। यह इस बात की ओर संकेत देता है कि ज्ञान अर्जन की सही मार्ग से उनका कहीं न कहीं विचलन हुआ है।

शिक्षाविदों का मानना है कि विषयगत वैशिष्ट्य अर्जित न कर पाने का एक बड़ा कारण विद्यार्थियों का माध्यमगत अभाव है। महात्मा गांधी की भी यही राय थी कि शिक्षा का माध्यम उच्च स्तर तक मातृभाषा ही होना चाहिए। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा सहज ग्राह्य और संप्रेक्षणिय तो होती ही है, शिक्षार्थी पर अतिरिक्त भाषा का अनावश्यक दबाव भी नहीं होता है। उसकी सृजनात्मक प्रतिभा परवान चढ़ती है, उसमें मौलिक सोच पैदा होती है।

फ्रांस, रूस, चीन, जापान, जर्मनी आदि देशों में शिक्षा सहित सभी क्षेत्रों में विकास की दूरी अपनी भाषा में अध्ययन अध्यापन ही रही है। सभी देश मौलिक अनुसंधान के क्षेत्र में बड़े चढ़े हैं। उनकी तुलना में भारत सहित अन्य सभी औपनिवेशिक देशों ने स्वतंत्र हो जाने के बाद भी शासक देश की भाषा का शिक्षा का माध्यम बनाए रखा, इसका परिणाम शिक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में वे पीछे रह गए।

यह आकस्मिक नहीं कि जब शिक्षा के सारे संसाधन हमारे अपने ही है, हमारे पास विश्व के सर्वाधिक समुचित विश्वविद्यालय हैं। शिक्षा, चिकित्सा, भूगोल, खगोल विज्ञान,वास्तुशास्त्र और गणितज्ञ थे। यहां विश्व स्तरीय अनुसंधान है, फिर शिक्षा जगत में हम पीछे कैसे रह गए। यह सोचने का विषय है। कहीं ना कहीं हम अपने दायित्व से बिछड़ गए हैं। विद्यार्थियों को लेखन की ओर प्रेरित नहीं किया। पढ़ने समझने के लिए प्रेरित नहीं किया। विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या विभिन्न नए विषयों की प्रति बढ़ती अभिरुचि के अनुरूप मौलिक लेखन की आवश्यकता भी निरंतर बढ़ रही है।

उच्च शिक्षा का मुख्य उद्देश्य युवा शक्ति को वैश्विक मानकों की कसौटी पर खड़ा उतरना है। ज्ञान ही वह साधन है जो मानव संसाधनों को उद्धत मूल्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व और सार्थक अस्तित्व प्रदान करने में सक्षम है। हमारे उच्च शिक्षा ज्ञान की पराकाष्ठा को अपने मूल्यों में समाहित करके पाठ्यक्रमों का प्रारूप रोजगारोन्मुख बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। शिक्षा की परिपूर्णता, अंतरण, अनुशासनात्मक ज्ञान से संपन्न है। किसी भी समृद्ध व्यक्तित्व के लिए इन सब विषयों का ज्ञान अनिवार्य है। आज की प्रतिष्ठनात्मक जीवन शैली में एक छात्र को पर्याप्त आत्मविश्वास व संप्रेषण की शक्तियां प्रदान करने में हमारे पाठ्यक्रम की संरचना अत्यंत आधारभूत होनी चाहिए। हमारा उद्देश्य है कि हमारा विद्यार्थी न केवल सफल जीविका जीविकोपार्जन करें, अपितु सार्थक, सक्षम, जागरूक नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण की अद्भुत अनिवार्य कड़ी भी बनें। उसके पास ज्ञान का तेज के साथ-साथ नैतिकता का बल भी हो। वह जीवन के हर क्षेत्र में वांछित प्रभाव एवं सफलता प्राप्त कर सकता हैं।

देश कि शिक्षा नीति उस देश की प्रकृति, संस्कृति और प्रगति के अनुरूप होना चाहिए। आनंद और प्रसन्नता का विषय है कि 34 वर्षों के उपरांत देश में 'नई शिक्षा नीति 2020' सामने आई है। यह भारत केंद्रित व समग्रता के साथ भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता देने व अनेक विशेषताओं के साथ हमारे समझ आई है। छोटे बच्चे अपने परिवार की भाषा मातृभाषा में जल्दी किसी बात को ग्रहण कर लेते हैं, इसलिए बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा भारतीय भाषा में हो, इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। महाविद्यालयीन शिक्षा के साथ उच्च शिक्षा में भी अनेक महत्वपूर्ण कदम भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने के लिए उल्लेखनीय है।

भारतीय भाषाओं में लिखा गया साहित्य भारत की राष्ट्रीय पहचान और धरोहर है। परिवार की भाषा अपनेपन का एहसास कराती है और भावनाओं की अभिव्यक्ति भी करती है। संस्कृति के संरक्षण, संवर्धान और प्रचार के लिए हमें अपने देश की भाषाओं का संरक्षण व संवर्धन करना होगा। यह तभी संभव होगा जब उन्हें नियमित रूप से तथा शिक्षण अधिगम के लिए उपयोग किया जाए। विश्व में भारत ऐसा देश है, जहां मौसम, खानपान, वेशभूषा और भाषा में इतनी विविधता है। यह विविधताएं ही हमारी ताकत हैं और भाषा ही एकता और एकात्मता का सशक्त माध्यम होती है। भारतीय भाषाओं में जो समता है, वह दूसरे देश की भाषाओं के साथ देखने को नहीं मिलता है।

युवा उद्यमी और ऊर्जावान होते हैं, काम करने का जुनून भी रखते हैं, लेकिन सही दिशा निर्देशों के अभाव में वे कहीं भटक जाते हैं, उनकी ऊर्जा को सही दिशा और गति देने के लिए सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था-'उठो जागो और तब तक न रुको जब तक अपना ध्येय न पा लोय का संदेश शिक्षा के माध्यम से उन तक पहुंचाना ही नैतिक मूल्य है। उच्च शिक्षा के छात्र जो देश के युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, उनमें समाज के प्रति जवाबदेही होना अत्यंत आवश्यक है। युवा पीढ़ी में समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण निर्मित होना चाहिए। उनके आसपास का समाज किस प्रकार राष्ट्रहित के लिए कार्य करें, इसकी योजना तैयार की जानी चाहिए। युवा पीढ़ी समाज को एक नया रूप प्रदान कर सकती है, समाज की उपयोगिता बढ़ा सकती है। इसके लिए युवाओं को अपना स्वयं का चारित्रिक निर्माण करना होगा, सामान्य नैतिक मूल्यों का पालन करना होगा तथा अपनी आत्मशक्ति द्वारा समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करना होगा। नैतिक मूल्य समाज के सूखी, संयमित, समाजोपयोगी जीवन के लिए सशक्त आधार प्रदान करते हैं। नैतिक मूल्य की कमी सामाजिक विघटन की ओर संकेत करती है। पीढ़ी- दर- पीढ़ी नैतिक मूल्यों की परिभाषाएं बदलती रहती है, लेकिन कुछ मूल्य ऐसे हैं जो शाश्वत है। प्रत्येक काल और समय में उसका अस्तित्व अनिवार्य है। ऐसे मूल्यों की रक्षा करना, उनके संवर्धन के प्रयास करना और उनकी कमी को पूरा करने के लिए उन्हें पुन: प्रतिष्ठित करना प्रत्येक परिवार, समाज और राष्ट्र का कर्तव्य है। इस निर्माण में शिक्षण संस्थानों की अहम भूमिका है।

आने वाला युग युवा पीढ़ी का होगा। ऐसा अनुमान है कि हमारे देश की आबादी का लगभग 70 प्रतिशत अंश युवा पीढ़ी का है। युवा पीढ़ी देश का भविष्य निर्धारित करेगी। यदि युवा इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए तैयार है तभी हम देश के भविष्य को सुरक्षित मान सकते हैं। यदि युवाओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम ही न हो, देशभक्ति का जज्बा न हो, समाज की प्रति दायित्वबोध न हो और उसका अपना व्यक्तिगत आचरण, व्यवहार संयमित न हो तो वे किस प्रकार अपना और राष्ट्र का हित कर पाएंगे। यह गंभीरता से सोचने की बात है। यदि अब हमने अधिक विलंब किया, युवाओं को कर्तव्य

बोध कराने में सफल नहीं हुए तो शायद इतिहास भी हमें कभी क्षमा नहीं कर पाएगा।

यह कटु सत्य है कि किसी भी राष्ट्र का समुचित उत्थान उस राष्ट्र के शिक्षा स्तर पर निर्भर करता है। शिक्षा का स्तर स्वच्छ, अनुशासनप्रिय तथा सदाचार से परिपूर्ण होना चाहिए।, तभी तो व्यक्ति शिक्षित होकर राष्ट्र के संबंध में कुछ सोच- समझ सकता है और राष्ट्र के विकास के मार्ग को समझते हुए, उसके विकास के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा सकता है। फलस्वरुप राष्ट्र के विकास में शिक्षा की भूमिका अपने आप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सच पूछा जाए तो राष्ट्रीयता की भावना एक ऐसा सोपान है जिसके जरिए राष्ट्र विकास के अंतिम पड़ाव तक पहुंचने में सक्षम बनता है, लेकिन क्या किया जाए। फिलहाल तो हमारे राष्ट्र के विकास के सब द्वार बंद दिखाई दे रहे हैं क्या हो गया हमारे हिंदुस्तान को, जहां गुजरे हुए वक्त में हमारे राष्ट्र में जहां बड़े-बड़े दिग्गज, राजा- महाराजा, विद्वान, ऋषि मुनि थे। हमारे देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था। आज गरीबों का देश कहा जा रहा। अभी भी समय है देश में शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा बहुत आवश्यक हैं। नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो हमारा राष्ट्र तभी वह एक विकसित राष्ट्र के साथ एक नैतिक राष्ट्र भी बन सकता है। युवा वर्ग अपनी कर्तव्य परायणता के जरिए राष्ट्र को पूर्ण सार्थक बना सकता है। इस प्रकार हम कह सकतें हैं कि शिक्षा वह सीढ़ी है जिस पर चढ़कर हम विकास के मंजिल तक पहुंच सकते हैं। हमारा राष्ट्र भविष्य में विकसित राष्ट्र का दर्जा प्राप्त कर लेगा,यदि हम एकजुट होकर हाथ से हाथ मिलाकर काम करें। अपने राष्ट्र को परंपरागत मूल्यों और आदर्श से विकसित करना है और इसके लिए हमें अपनी प्राचीन परंपरा और संस्कार को कायम रखना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हिंदी भाषा और नैतिक मूल्य मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी पृष्ठ संख्या 112 से 123 तक।
2. भाषा और संस्कृति- मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
3. नैतिक मूल्य और भाषा मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
4. हिंदी निबंध आनंद प्रकाशन ग्वालियर।

****